B.A. Part III सूर का श्रृंगार
Hindi Hons (2)

क्रमशः
अंतरा क्रमशः

ब्रज की गलियों में खेलते-खेलते यमुना के किनारे पहुँचते हैं। वहाँ गोरा शरीर, नीला वस्त्र, पीठ पर बेणी, विशाल आँखें और अल्पवयस्का वाली नायिका से कृष्ण का साक्षात्कार होता है। श्याम की आँखें राधा की आँखों में अटक गईं—

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी।
कटि कछनी पीताम्बर ओढ़े, हाथ लिये भौंरा चकडोरी।।
गये श्याम रवि-तनया के तट, अंग लसति चंदन खोरी।
औचक ही देखी तह राधा, नैन विशाल भाल दिये रोरी।
सूर श्याम देखत ही रीझे, नैन नैन मिलि परी ठगोरी।।

राधा और कृष्ण का साथ बचपन में हो गया। दोनों में निरन्तर प्रेम बढ़ता ही जाता है। दोनों एक दूसरे के घर जाने लगे तथा असंख्य प्रकार की लीलाएँ करने लगे। संयोग श्रृंगार के अनेक मनमोहक चित्र उभरकर सामने आने लगे। नायिका के साथ कृष्ण के गोदोहन का एक चित्र बड़ा ही मनमोहक है—

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।
मोहन कर तें धार चलति पय, मोहनि मुख अति ही छवि बाढ़ी।।

इसलिए आचार्य शुक्ल ने ठीक ही कहा है कि — वात्सल्य और प्रेम भाव की मनोवृत्ति का जैसा विस्तृत और पूर्ण परिष्कार सूर को था वैसा किसी कवि को नहीं।

सूर का संयोग वर्णन जितना मनोरम एवं उल्लासपूर्ण है उनका वियोग वर्णन भी उतना ही करुणाप्लावित एवं मर्मस्पर्शी है। कृष्ण अक्रूर के साथ मथुरा चले जाते हैं। इसी घटना से सूर के वियोग श्रृंगार का प्रारम्भ होता है। कुछ दिनों तक कृष्ण के आने की बाट गोपियाँ जोहती हैं जब कृष्ण नहीं आते हैं तो गोपियों के आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है।

क्रमशः —